मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत

"भ्रष्टाचार-भ्रष्ट + आचरण" मैं कुछ वर्ष पूर्व इस तरह के विषय पर पहले भी अपने विचार व्यकत कर चुकी हूँ और उस समय के निदेशक महोदय से पुरस्कृत भी किया गया । विचार अभी भी वही है शीर्षक बस बदल गया उस वक़्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई मुझसे शुरू होती है येही शीर्षक था। आज इतने वर्षो के बीत जाने के पश्चात भी भ्रष्टाचार की जड़ें उतनी ही मजबूत हैं जितनी उस वर्ष मैंने मेहसुष की थी। भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह चाट रहा है। घोटालों और रिश्वतखोरी ने देश को काफी पीछे खींच दिया है। ऐसे में जरूरत है सही समय पर जागरूक होने की, जरूरत है समय रहते संभल जाने की। क्योंकि हालात ऐसे ही बने रहे तो देश को गर्त में जाने से कोई नहीं बचा सकता है। मेरे द्वारा रचित कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:

"हर ओर अंधेरा छाया है, एक काला सूरज दिखता हैं,
मुझको अपने चारो ओर **भ्रष्टाचार** ही दिखता है।

कुरशी का लालच जब बोले, अधिकारो का गुणगान दिखे,
आलस और ~~निसश्चता~~ नीरसता में ही ये अवगुण और निखरता है,
मुझको अपने चारो ओर **भ्रष्टाचार ही दिखता है।**

राशन की दुकानों पर, बिल भरने की होड दिखे,
जब बूढ़ो को धक्का देना किसी जवान का अभिमान हो,
पैसे देकर खुश होकर दंभी जहां निखरता है,
मुझको अपने चारो ओर **भ्रष्टाचार ही दिखता है।**

27/10

दाबी फ़ाइल में बैठ कभी लक्ष्मी का वाहन बदले,

कुरशी के नीचे से जब मिठाई का स्वाद बदलता है,

मुझको अपने चारो ओर **भ्रष्टाचार ही दिखता है।**

हर ओर अंधेरा छाया है, एक काला सूरज दिखता है,

मुझको अपने चारो ओर **भ्रष्टाचार** ही दिखता है। "

भ्रष्टाचार पर विचार व्यकत करने बैठे तो कभी खतम ही न हों, परंतु इससे मुक्ति पाने का सबसे आसान उपाय स्वयं को इस मुहिम की सबसे पहली कड़ी बनाना बाकी कड़ियाँ खुद ब खुद जुड़ती चली जाएंगी। आज हमको सब कुछ आसानी से पा लेने की आदतसी पड चुकी है। लाइन में न रहना पड़े कुछ ले दे कर काम हो जाए कोई प्रमाणपत्र ही बनवाना हो घर बैठे काम हो जाए कुछ पैसे ही तो देने पड़ेंगे ऐसी सोच से ही भ्रस्तचार की उपज होती है। यही सोच का नतीजा है की आज कोई भी अच्छी परियोजना लाने के लिए हमारी सरकार को इतनी जदोजहत करनी पड़ती है।

मैं छोटे स्तर से ही इस बीमारी से मुक्ति के विषय में बताना चाहती हूँ। शायद मेरे विचारो से कोई सहमत न हो परंतु मेरा मानना येही है की येदि हम स्वयं अपने अपने अधिकारो को त्याग अपने कर्तव्यों को पूरी तन्मयता से निभाएँ तो अगले वर्षो में शायद इस निबंध का शीर्षक बादल कर "भ्रष्टाचार मुक्त प्रथम देश- भारत" हो जाए।

आज हर स्तर पर हमको किसी न किसी रूप में इस राक्षस का सामना करना पड़ता है चाहे अपने बच्चो की शिक्षा से संबन्धित हो , चाहे राशन खरीदना हो, फिर चाहे अपने व्रद्धा माता

27/10

पिता की पेंशन के लिए फ़ंड ऑफिस के चक्कर लगाना। मैं स्वयं भी इसका कई बार सामना कर चुकी हूँ तो अन्य का उदाहरण क्यूँ दूँ... समय के साथ मेरा पद भी बढ़ गया है और अनुभव भी परंतु इस समस्या से जूझने में आज भी उतनी ही कम अनुभवी हूँ जितनी उस वर्ष थी।

भ्रष्टाचार के मूल कारण हैं:

नैतिक मूल्यों में आयी भारी गिरावट। आज शायद ही किसी व्यक्ति को संविधान में दिये गए नीति निर्देशक तत्वो के विषय में मालूम होगा।

भ्रष्टाचार के अन्य कारण

1) भौतिक विलासिता में जीने तथा ऐशो-आराम की आदत तथा झूठे दिखावे व प्रदर्शन के लिए। झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए। धन को ही सर्वस्व समझने के कारण 2) अधर्म तथा पाप से बिना डरे बेशर्म चरित्र के साथ जीने की मानसिकता का होना । 3) अधिक परिश्रम किये बिना धनार्जन की चाहत । 4) राष्ट्रभक्ति का अभाव । 5) मानवीय संवेदनाओं की कमी । 6) गरीबी, भूखमरी तथा बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि तथा व्यक्तिगत स्वार्थ की वजह से । 7) लचीली कानून व्यवस्था।

उपरोक्त कारणो से ही भ्रष्टाचार हमारे देश में पल्लवित हो रहा है। कुछ लोगों में सम्मान अथवा पद की आकांक्षा होती है तो कुछ में धन की लोलुपता । ऐसे व्यक्ति असंतोष और लोलुपता के कारण ही वे न्याय-अन्याय में अंतर नहीं कर पाते हैं तथा भ्रष्टाचार की ओर उन्मुख हो जाते हैं । भाषावाद, क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता, जातीयता आदि भी भ्रष्टाचार को प्रोत्साहित करते हैं ।

भ्रष्टाचार के अनेक रूप हैं । चोरबाजारी, रिश्वतखोरी, दलबदल, जोर-जबरदस्ती आदि भ्रष्टाचार के ही रूप हैं । भ्रष्टाचार वर्तमान में एक नासूर बनकर समाज को खोखला करता जा रहा है । धर्म का नाम लेकर लोग अधर्म को बढ़ावा दे रहे हैं आज दोषी व अपराधी धन के प्रभाव में स्वच्छंद होकर घूम रहे हैं । धन-बल का प्रदर्शन, लूट-पाट, तस्करी आदि आम बात हो गई है।

भ्रष्टाचार का हमारे समाज और राष्ट्र में व्यापक रूप से असर हो रहा है । संपूर्ण व्यवस्था में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई । परिणामत: समाज में भय, आक्रोश व चिंता का वातावरण बन रहा है । राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक व प्रशासनिक आदि सभी क्षेत्र इसके दुष्प्रभाव से ग्रसित हैं ।

यह हमारी व्यवस्था में इस प्रकार समाहित हो चुका है कि आज इसे दूर करना प्रत्येक राष्ट्र के लिए लोहे के चने चबाने जैसा हो गया है । आजकल तो सेना में भी भ्रष्टाचार फैल रहा है जिसके कारण देश की सुरक्षा पर प्रश्नचिह्न लग गया है ।

भ्रष्टाचार किसी व्यक्ति विशेष या समाज की नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र की समस्या है । इसका निदान केवल प्रशासनिक स्तर पर हो सके ऐसा संभव नहीं है । इसका समूल विनाश सभी के सामूहिक प्रयास के द्वारा ही संभव है । इसके लिए केंद्रीय स्तर पर राजनीतिक इच्छा-शक्ति का प्रदर्शन भी नितांत आवश्यक है ।

<u>भ्रष्टाचार से मुक्ति के उपाय:</u>

<u>प्रशासनिक स्तर पर</u> यह आवश्यक है कि भ्रष्टाचार के आरोपी व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही हो ।

27/10

<u>सामाजिक स्तर पर</u> यह आवश्यक है कि हम ऐसे तत्वों को बढ़ावा न दें जो भ्रष्टाज्जार को बढ़ावा देते हैं या उसमें लिप्त हैं। यह आवश्यक है कि उन्हें हम मुख्य धारा से अलग कर दें जब तक कि वे नीति के मार्ग पर नहीं चलने लगें ।

व्यक्तिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि हम यह समझें कि समाज से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने का उत्तरदायित्व हम पर ही है । तब निस्संदेह हम भविष्य में भ्रष्टाचार रहित समाज की कल्पना कर सकते हैं।

<u>भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय</u>:

भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए उल्लेखित सभी कारणों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके उसे अपने आचरण से निकालने का प्रयत्न करना होगा तथा जिन कारणों से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है, उनको दूर करना होगा। अपने राष्ट्र के हित को सर्वोपरि मानना होगा । व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़कर भौतिक विलासिता से भी दूर रहना होगा । ईमानदार लोगों की अधिकाधिक नियुक्ति कर उन्हें पुरस्कृत करना होगा । भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध कठोर कानून बनाकर उन्हें उचित दण्ड देना होगा तथा राजनीतिक हस्तक्षेप को पूरी तरह से समाप्त करना होगा ।

<u>उपसंहार</u>

हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी समझ कर हमको ही इस दानव को खतम करने के लिए अग्रासर होना पड़ेगा। हमको अपने कर्तव्यों के वहन करने में किसी प्रकार से भी अधिकारो को बीच में नहीं लाना चाहिए क्यूंकी जहां आपके अधिकार शुरू होते है वह दूसरों के कर्तव्य, और जहां हमारे कर्तव्य शुरू होते हैं वहाँ दूसरों के अधिकार। अपने दायित्व को पूरी तन्मयता के साथ हमको

27/10

निर्वाह करना चाहिए फिर चाहे उसके लिए हमको कई समस्याओ का सामना ही क्यूँ न करना पड़े। समभवतः शुरुआत करने में कुछ मुश्किलों का सामना भी करना पड़ेगा और कुछ अधिकारो को भी भूलना पड़ेगा। जिस प्रकार हर रात के बाद चमकदार सवेरा होता है ठीक उसी प्रकार हमारे थोड़े से प्रयत्न करने के बाद ही हमको **भ्रष्टाचार मुक्त समाज मिलेगा, और जब एक समाज भ्रष्टाचार मुक्त होगा तो राज्य को इससे मुक्ति पाते देर नहीं लगेगी और राज्यो के उन्मुक्त होते ही हमको हमारा देश भ्रष्टाचार से मुक्त मिलेगा। जिस प्रकार हम अपने बच्चो को पालने का दायित्व स्वयं का समझते है उसी प्रकार हमारा दायित्व हमारे देश के लिए भी ऐसे ही समझना चाहिए।**

भ्रष्टाचार का कैंसर हमारे देश के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है । यह आतंकवाद से भी बड़ा खतरा बना हुआ है । भ्रष्टाचार के समाधान के लिए आवश्यक है कि भ्रष्टाचार संबंधी नियम और भी सख्त हों तथा भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को कड़ी से कड़ी सजा मिले । इसके लिए सख्त और चुस्त प्रशासन अनिवार्य है । इस समस्या के निदान के लिए केवल सरकार ही उत्तरदायी नहीं है, इसके लिए सभी धार्मिक, सामाजिक व स्वयंसेवी संस्थाओं को एकजुट होना होगा । सभी को संयुक्त रूप से इसे प्रोत्साहन देने वाले तत्वों का विरोध करना होगा ।

सभी भारतीय नागरिकों को इसे दूर करने हेतु कृतसंकल्प होने की आवश्यकता है । भ्रष्टाचार के दोषी व्यक्तियों का पूर्णरूपेण सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए ताकि ऐसे लोगों के मनोबल को खंडित किया जा सके जिससे वह इसकी पुनरावृत्ति न कर सके । भ्रष्टाचार के विरोध में राष्ट्रीय जन-जागृति ही राष्ट्र को भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों से मुक्त करा सकती है ।

27/10

हम जब अपने कर्तव्यो का वहाँ करेंगे और एक अखंड भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र के लिए एकजुट होंगे तथा भ्रष्टाचार में किसी भी रूप में शामिल नहीं होंगे, उसी समय हम गर्व से कह सकते हैं कि:

"अरुण यह मधुमय देश हमारा!

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा ।

सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर,

छिटका जीवन हरियाली पर मगंल कुंकुम सारा।

अरुण यह मधुमय देश हमारा ! "

-जयशंकर प्रसाद

27/10

नाम: रत्ना पाल
व.प.स.:५०८६
पद: कनी.अधीक्षक
अक्कौंट्स सेक्शन
आईआईटी, कानपुर